शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 15 | July-September -2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 75 -78

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

कल्पना नरसिंग फराटे
शोधार्थी
ईमेल-kalpanadhamdhere327@gmail.com
प्रो. डॉ. प्रमोद भागचंद पडवळ
शोधनिर्देशक
ईमेल-padwalpramod9@gmail.com
अनुसंधानकेंद्र :- चांदमल ताराचंद बोरा महाविद्यालय, शिरूर, जि. पुणे (महाराष्ट्र)

Received– 28 September - 2026
Accepted– 29 September - 2026
Published– 30 September-2026
Corresponding Author-
कल्पना नरसिंग फराटे
शोधार्थी ईमेल-kalpanadhamdhere327@gmail.com
DOI- https://doi.org/10.67275/SU.2026.041521
Funding Policy-
'Shodh Utkarsh' is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.
वित्त पोषण नीति-
'शोध उत्कर्ष' एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।
Copyright Notice -
© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).
कॉपीराइट सूचना-
© 2026 लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।
OPEN ACCESS Shodh Utkarsh CC-BY 4.0

सामाजिक यथार्थ की अवधारणा-सामाजिक यथार्थ से तात्पर्य है कि साहित्य में समाज की वास्तविक परिस्थितियों, संबंधों, संघर्षों, असमानताओं और मानवीय अनुभवों का सटीक चित्रण किया जाए। किसी व्यक्ति का स्थान केवल उसकी योग्यता से नहीं, बल्कि परिवार, आर्थिक स्थिति, सामाजिक प्रतिष्ठा, परंपराओं और मान्यताओं से भी निर्धारित होता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से साहित्य का अध्ययन करते समय यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि पात्र का संघर्ष केवल उसकी व्यक्तिगत समस्या नहीं होता, बल्कि उसके पीछे सामाजिक व्यवस्था, लैंगिक असमानता और परंपरागत अपेक्षाएँ भी कार्य करती हैं। इस संदर्भ में नासिरा शर्मा के उपन्यास स्त्री और समाज के संबंधों के विश्लेषण के लिए अत्यंत उपयुक्त माने जा सकते हैं।
ठीकरे की मंगनी' में सामाजिक यथार्थ-नासिरा शर्मा का उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी' स्त्री की सामाजिक स्थिति, पारिवारिक अपेक्षाओं और उसकी स्वतंत्र पहचान के सवालों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। इसमें मुख्य पात्र महरूख के जीवन के जरिए स्त्री के व्यक्तिगत फैसलों और सामाजिक मान्यताओं के बीच के संघर्ष को दिखाया गया है।
परंपरा और स्त्री की स्वतंत्रता-आज के पारंपरिक समाज में विवाह को केवल दो व्यक्तियों का संबंध न मानकर, परिवार की प्रतिष्ठा और सामाजिक व्यवस्था से जोड़ा जाता है। ऐसी स्थिति में स्त्री की इच्छा और व्यक्तिगत निर्णय अक्सर गौण हो जाते हैं। 'ठीकरे की मंगनी' में महरूख के जीवन के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि विवाह और पारिवारिक अपेक्षाओं के प्रश्न स्त्री के जीवन के निर्णयों के अधिकार पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं।

आज की नारी पुरुष सत्ता के धोखे के सामने नतमस्तक न होकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्मित करती है। जब खानदान में कई पीढ़ियों के बाद लड़की जन्म लेती है, तो महरूख सभी की धड़कन बन जाती है। उसी समय महरूख की खाला अपने बेटे रफत से उसकी 'ठीकरे की मंगनी' करवा लेती है। महरूख उन युवतियों में से है जो सामाजिक कड़ियों और पुरानी परंपराओं को तोड़कर स्वयं अपने भविष्य का निर्माण करती है। वह उन युवतियों में से नहीं है जो समाज के बंधनों के कारण घुटन भरा जीवन व्यतीत करती हैं, अपितु सभी कड़ियों एवं बंधनों को तोड़कर मुक्त हवा में साँस लेने के लिए वह व्याकुल है। क्या नारी स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकती? आधुनिक युग में भी महिलाओं को पुरुषों के सहारे चलना पड़ेगा। वह अपने अस्तित्व और अस्मिता के प्रति सचेत क्यों नहीं है? आदि अनेक प्रश्न महरूख के मन में उभरते हैं। जब महरूख शादी से इनकार कर देती हैं, तब उसकी माँ सोच में डूब जाती है कि अकेली बेटी जिंदगी कैसे काटेगी? उसे कौन सहारा देगा? तब महरूख माँ से कहती है..."औरतों की खुशकिस्मती और बदकिस्मती के कितने बंधे-बधाए ढर्रे हैं। बरसों से चली आ रही यह सोच कब बदलेगी? कब औरत की कीमत ठीकरे और कौड़ियों से नापना बंद होगा? कब उसे इंसान समझकर उसकी बोलियाँ लगनी बंद होंगी? कब उसे मर्दों के सहारे के बिना दुनिया जीतते देखना पसंद होगा?

कब उसे अपनी तरह जीने की आज़ादी मिलेगी? आखिर कब?" [1] समाज में नारी का प्रतिदिन शोषण होता हुआ प्रतीत होता है। इस अत्याचार को नारी चुपचाप सहन करने के लिए भी विवश है। यदि वह विरोध करती है, तो उसे तरह-तरह की यातनाएं सहनी पड़ती है। सदियों से अत्याचार सहती नारियाँ अब अपने अधिकारों के प्रति सचेत होने लगी हैं। इस उपन्यास का समाजशास्त्रीय अध्ययन यह प्रश्न उठाता है कि परंपरा का पालन करते समय व्यक्ति की स्वतंत्रता और गरिमा की रक्षा कैसे की जा सकती है। इस प्रकार रचना में स्त्री की स्थिति को व्यापक सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में चित्रित किया गया है।

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 15 | July-September -2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 75 -78

महरूख की आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र पहचान- 'ठीकरे की मंगनी' इस उपन्यास में महरूख के चरित्र का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने का प्रयास किया है। स्त्री की स्वतंत्रता का अर्थ सिर्फ पारिवारिक बंधनों से मुक्त होना नहीं है, बल्कि अपने जीवन के संबंध में निर्णय लेने, अपनी क्षमताओं को विकसित करने और समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने का अधिकार भी है। महरूख के चरित्र के संदर्भ में यह देखा जा सकता है कि स्त्री का व्यक्तित्व सिर्फ पत्नी, पुत्री या परिवार की सदस्य होने तक सीमित नहीं होना चाहिए। उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व और सामाजिक दायित्व भी महत्त्वपूर्ण हैं।

इस उपन्यास की प्रमुख पात्र महरूख गाँव में पढ़ाने जाती है। तब गाँव के चंद खुशहाल मुसलमानों के घरों के लोग मेल-जोल बढ़ाना चाहते हैं। यहाँ तक कि सलमान ने तो अपने छोटे भाई इमरान के लिए निकाह का पैगाम भी भेजा। परंतु महरूख ने बड़ी शालीनता से मना कर दिया। वह
अनावश्यक धर्म के नाम पर मेल-जोल बढ़ाना पसंद नहीं करती है। परंतु जब लछमिनिया नामक औरत की हालत बिगड़ती है। तो मदद के लिए वह तुरंत सलमान के पास पहुँचकर मदद की गुहार लगाती है और कहती है -"देखिए लछमिनिया की हालत बहुत खराब है अगर आस-पास से किसी लेडी डॉक्टर का इंतजाम हो सके तो वह जरूर बच जाएगी। इस वक्त आपकी मदद की बहुत जरूरत है। पैसे का मुँह न देखिएगा। जैसे भी हो, आप डॉक्टर का बंदोबस्त कर दीजिए। " [2] यहाँ महरुख यह व्यवहार पाठकों को सच्चे धर्म की ओर इशारा करता है। मनुष्य के जीवन में धार्मिक विश्वास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन धार्मिक विश्वासों के आधार पर ही मनुष्य उचित-अनुचित का निर्णय लेकर सही मार्ग का अनुसरण करता है। उपन्यास के संबंध में महरूख की स्वतंत्र पहचान और उपेक्षित तथा संघर्षशील लोगों के जीवन से उसके जुड़ाव को विशेष महत्त्व दिया गया है। इससे महरूख का चरित्र व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा से भी जुड़ा है।

स्त्री अस्मिता और सामाजिक परिवर्तन- स्त्री अस्मिता का अर्थ स्त्री की अपनी पहचान, आत्मसम्मान और व्यक्तित्व की स्वतंत्र स्वीकृति है। जब सामाजिक व्यवस्था स्त्री को सिर्फ पारंपरिक भूमिकाओं में सीमित करती है, तब उसकी स्वतंत्र पहचान का प्रश्न महत्त्वपूर्ण बन जाता है। 'ठीकरे की मंगनी' में महरूख के जीवन-संघर्ष के माध्यम से यह विचार सामने आता है कि स्त्री को अपने जीवन का अर्थ स्वयं निर्धारित करने का अवसर मिलना चाहिए। उसका सामाजिक योगदान केवल वैवाहिक जीवन तक सीमित नहीं होना चाहिए। इस दृष्टि से महरूख का
चरित्र सामाजिक परिवर्तन की संभावनाओं की ओर संकेत करता है। वह स्त्री की स्वतंत्रता को व्यापक सामाजिकता से जोड़ने का अवसर प्रदान करती है। अतः यह उपन्यास स्त्री अस्मिता और सामाजिक उत्तरदायित्व के संबंधों पर विचार करने के लिए उपयोगी है।

इस उपन्यास में दरअसल देश के अंदर आई एक नई सोच और परिवर्तन को रेखांकित करता है, उस ज़रूरत को भी जो गाँव-देहात और शहरों में तमाम तरह की उस जकड़बंदी से निकलने के लिए ज़रूरी है जो समाज को बाँधे रखते हैं। साथ ही यह भी कि पढ़ाई-लिखाई करना और व्यावहारिक तौर पर चीज़ों को समझना और करना में बहुत फ़र्क़ है। इस बात का महरुख़ का किरदार समर्थन करता है। नासिरा शर्मा ने तीसरे घर की अवधारणा को इसमें पुष्ट दी है। नए घर की अवधारणा और नई सोच के उभार के साथ स्वावलंबी महरुख़ एक मिसाल पेश करती है। उस अवधारणा को सबके सामने रखते हुए वह चौंका देती है। जब सब कुछ छोड़कर उस घर में बसने के लिए चले जाती है जिसे उसने तीस साल मेहनत करके कमाया था—सभी लोगों के बीच और सभी लोगों के साथ। तब महरूख कहती है-"एक घर औरत का अपना भी तो हो सकता है जो उसके बाप और शौहर के घर से अलग, उसकी मेहनत और पहचान का हो।"[3] अपने द्वारा कमाए गए उस घर में पहुँचकर महरुख़ एक सुकून और चैन महसूस करती है, जहाँ सब लोग उसे उतना ही प्यार, अपनापन के साथ स्वागत करते हैं जितना वे छह साल पहले किया करते थे। महरुख़ इस भाव को अंदर तक महसूस करती है कि यह मिट्टी, यह हवा, यह पानी, यह ज़मीन मेरी पहचान है।

शाल्मली' में सामाजिक यथार्थ- नासिरा शर्मा का उपन्यास 'शाल्मली' स्त्री की वैवाहिक स्थिति, पारिवारिक संबंधों और पुरुष मानसिकता के अध्ययन की दृष्टि से उल्लेखनीय है। उपन्यास में शाल्मली के चरित्र के माध्यम से यह समझने का अवसर मिलता है कि शिक्षा, नौकरी, योग्यता और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के बाद भी स्त्री को निजी जीवन में विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। स्त्री का जीवन केवल उसकी व्यक्तिगत परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होता, बल्कि समाज में प्रचलित परंपराएँ, लैंगिक भूमिकाएँ और पारिवारिक अपेक्षाएँ भी उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। इस दृष्टि से उपन्यास का समाजशास्त्रीय अध्ययन स्त्री और समाज के बीच संबंधों को समझने में सहायक है। उपन्यास के मूल पाठ के आधार पर स्त्री की स्वतंत्रता, आत्मसम्मान, निर्णय-क्षमता तथा बदलते सामाजिक मूल्यों का विश्लेषण किया है। इस प्रकार 'शाल्मली' सामाजिक व्यवस्था और स्त्री जीवन के अंतर्संबंधों के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कृति है।

वैवाहिक जीवन और पुरुष मानसिकता- इस उपन्यास की प्रमुख पात्र शाल्मली एक शिक्षित, पढ़ी-लिखी संस्कार संपन्न तथा सद्विचारों वाली नारी है। वह बड़ी अफसर होने के बावजूद अपने दफ्तर के साथ-साथ परिवार को भी बखूबी संभालती है। परंतु उसका पति नरेश उसके इस स्वरूप को स्वीकार नहीं करता। अपनी गलत आदतों के कारण वह शाल्मली को ही तरह-तरह से प्रताड़ित करता रहता है। इस सबके बावजूद भी वह पूर्णतः शांत रहकर तालमेल बिठाकर घर चलाने का प्रयास करती है। वह अपने ऊपर पुरुष सत्ता हावी नहीं होने देती है, साथ ही रिश्तों को तोड़ने के बजाय वह रिश्तों को संभालकर चलाने का प्रयास करती है। इस उपन्यास में भारतीय समाज में चली आ रही परंपरागत सोच है कि 'बेटी पराया धन होती है' लड़का-लड़की दोनों एक समान होते है। इस आधुनिक सोच के कारण इन दोनों के बीच पारस्परिक संघर्ष उत्पन्न होता है। जब शाल्मली की माँ अपने पति से कहती है कि "लड़की पराया धन है, पति के घर सुख से रहे, यही सबसे बड़ा आशीर्वाद है, बाकी तो...।" तब शाल्मली के पिताजी श्यामल से कहते हैं, कि अब वक्त बदल गया है। आज औरत सिर्फ पत्नी बनने तक सीमित नहीं है। वह स्वतंत्रता के बाद शिक्षा लेकर आगे बढ़ रही है। इस उपन्यास में नासिरा शर्मा ने वर्तमान शिक्षा, पारंपरिक संकुचित सोच, सामाजिक रिश्तों में धैर्य एवं व्यवहारिकता आदि विभिन्न पक्षों पर भी दृष्टिपात किया है।

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 15 | July-September -2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 75 -78

भारतीय समाज में विवाह को एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक संस्था माना जाता है। आदर्श रूप में यह संस्था समानता, सहयोग, विश्वास और पारस्परिक सम्मान पर आधारित होती है। लेकिन जब वैवाहिक संबंधों में एक व्यक्ति स्वयं को दूसरे से श्रेष्ठ मानने लगता है, तब संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। 'शाल्मली' के संदर्भ में पति-पत्नी के संबंधों और पुरुष मानसिकता का विश्लेषण किया गया है। शाल्मली और उसका पति नरेश के संबंधों में तनाव तथा पत्नी की उपलब्धियों के प्रति पति की असहजता का उल्लेख किया है। इस स्थिति को समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखने पर स्पष्ट होता है कि स्त्री की शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता के बावजूद सामाजिक मानसिकता में समानता का विकास आवश्यक है। केवल आर्थिक प्रगति से पारिवारिक संबंध स्वत: समानतापूर्ण नहीं बन जाते।

कामकाजी स्त्री की समस्याएँ- आधुनिके समाज में स्त्रियाँ शिक्षा और रोजगार के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान स्थापित कर रही हैं। इसके बावजूद उनसे पारंपरिक पारिवारिक भूमिकाओं का निर्वाह करने की अपेक्षा की जाती है। इस कारण कई बार उनके पेशेवर और पारिवारिक जीवन के बीच तनाव उत्पन्न होता है। शाल्मली के चरित्र के माध्यम से कामकाजी स्त्री की स्थिति पर विचार किया गया है। उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यावसायिक उपलब्धियों के साथ वैवाहिक जीवन की

समस्याओं का अध्ययन यह प्रश्न उठाता है कि क्या समाज स्त्री की सफलता को सहज रूप से स्वीकार करता है। इस संदर्भ में उपन्यास में स्त्री की उपलब्धियों और पारिवारिक संबंधों के बीच संतुलन की समस्या को समझने का अवसर प्रदान करता है। यह भी विचारणीय है कि परिवार में समानता स्थापित करने के लिए केवल स्त्री से त्याग की अपेक्षा करना पर्याप्त नहीं है; पुरुष और स्त्री दोनों की सहभागिता आवश्यक है।

इस उपन्यास की 'शाल्मली' एक संघर्षशील नारी है। उसका पति नरेश अपनी पत्नी को केवल अपनी दासी समझता है, उससे ज्यादा कुछ नहीं। नरेश शाल्मली को बार-बार अपमानित करता रहता है। नरेश हमेशा शाल्मली पर अपना अधिकार जमाता रहता है। उसे लगता है, हर कार्य शाल्मली से पूछकर करें। जब शाल्मली अपने अधिकार की बात करती है, तो वह कहता है, " नियम और धर्म केवल कागज पर लिखने के लिए होते हैं या फिर तुम औरतों के लिए बनाए जाते हैं । इनसे हटकर एक और कानून होता है, जो हम मर्दों के बीच प्रचलित है। उसका अपना संविधान, अपना नियम, अपना धर्म होता है।"[5] आज भी शाल्मली की तरह कई स्त्रियाँ शोषित जीवन जीने के लिए विवश दिखाई देती हैं। नासिरा शर्मा इस उपन्यास के माध्यम से सदियों से शोषित-पीड़ित नारी अब स्वतंत्र विचारधारा की ओर गतिमान हो रही हैं। समाज से लादे गए बंधनों और रूढ़ियों को तोड़कर खुली हवा में साँस लेने के लिए तत्पर दिखाई देती है।

स्त्री का आत्मसम्मान और प्रतिरोध- आत्मसम्मान व्यक्ति की गरिमा और स्वतंत्र व्यक्तित्व से जुड़ा होता है। वैवाहिक संबंधों में प्रेम और समर्पण का अर्थ यह नहीं है कि किसी व्यक्ति की इच्छाओं, उपलब्धियों या भावनाओं की उपेक्षा की जाए। 'शाल्मली' के समाजशास्त्रीय अध्ययन में यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि स्त्री किस प्रकार अपने आत्मसम्मान और पारिवारिक संबंधों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। उसका व्यवहार और प्रतिक्रिया सामाजिक परिस्थितियों से जुड़े होते हैं।'शाल्मली' इस उपन्यास में उसका पति नरेश और शाल्मली के बीच के दांपत्य जीवन को दिखाता है। दोनों का दांपत्य जीवन तब तनावपूर्ण हो जाता है जब शाल्मली आई. ए. एस. अधिकारी हो जाती है। उसका अधिकारी होना नरेश को अच्छा नहीं लगता। क्योंकि उसमें पुरुष वर्चस्व के खतरे की आहत नजर आती है। शाल्मली बेहद संस्कारिक, सुशील, उदार और विवेकशील प्रवृत्ति की महिला है । वह परिवार और नौकरी के बीच सामंजस्य स्थापित करते हुए आगे बढ़ती है। मगर नरेश अक्सर हर बात पर उससे झंझलाकर बात करता है। उसके औरत होने और औरत के दिमाग की बातें करके उसे कुरेदता रहता है। उसके इस व्यवहार से शाल्मली का मन व्यथित हो जाता है। शाल्मली भी गंभीरतापूर्वक नरेश को प्रत्युत्तर देने लगती है। "एक तो तुमसे विनम्र निवेदन है कि बार-बार औरत कहकर मुझ पर टीका-टिप्पणी मत किया करो। दूसरे औरत की अक्ल पर शक करना छोड़ दो। एक स्तर के बाद हम औरत मर्द नहीं रह जाते, बल्कि हमारा काम हमारी पहचान होती है, हमारे अकाल हमारी कसूती होती है।"[6] इस तरह हम कह सकते हैं कि नारी को अपने जीवन में ऐसा मार्ग ढूँढना चाहिए। जो खुद को सशक्त,आजाद और गरिमापूर्ण जीवन दे सके। इस उपन्यास के माध्यम से यह विचार सामने आता है कि स्वस्थ पारिवारिक जीवन के लिए पारस्परिक सम्मान, संवाद और समानता आवश्यक हैं। स्त्री को स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करना परिवार तथा समाज दोनों के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है।

दोनों उपन्यासों का तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन- 'ठीकरे की मंगनी' और 'शाल्मली' दोनों उपन्यासों में स्त्री की स्थिति और सामाजिक मान्यताओं का अध्ययन किया गया है । 'ठीकरे की मंगनी' में महरूख की स्वतंत्र पहचान, सामाजिक अपेक्षाओं और अपने जीवन के निर्णयों से जुड़े प्रश्न महत्त्वपूर्ण हैं। इसके विपरीत, 'शाल्मली' में वैवाहिक जीवन, कामकाजी स्त्री की स्थिति और पति-पत्नी के संबंधों का विश्लेषण प्रमुख है।

दोनों उपन्यासों को साथ पढ़ने पर यह समझने में सहायता मिलती है कि स्त्री की समस्याएँ किसी एक सामाजिक वर्ग या पारिवारिक परिस्थिति तक सीमित नहीं हैं। सामाजिक परंपराएँ, लैंगिक भूमिकाएँ और पुरुष-प्रधान मानसिकता विभिन्न रूपों में स्त्री के जीवन को प्रभावित किया हैं।

इन रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन स्त्री की स्वतंत्रता, सामाजिक सम्मान और समान अधिकारों की आवश्यकता को रेखांकित करता है। इस प्रकार नासिरा शर्मा का कथा-साहित्य सामाजिक संबंधों के विश्लेषण के साथ-साथ परिवर्तन की संभावनाओं पर भी विचार करने का अवसर प्रदान किया है।

शोध के प्रमुख निष्कर्ष- प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आते हैं—

1. नासिरा शर्मा के चयनित उपन्यासों में स्त्री और समाज के संबंधों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया है।
2. 'ठीकरे की मंगनी' महरूख के जीवन के माध्यम से स्त्री की स्वतंत्र पहचान और आत्मनिर्णय के प्रश्नों को समझने का अवसर प्रदान करता है।
3. 'शाल्मली' वैवाहिक संबंधों, कामकाजी स्त्री की स्थिति और पुरुष मानसिकता के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण है।
4. दोनों उपन्यास सामाजिक परंपराओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच के संबंधों पर विचार करने की संभावना प्रस्तुत करते हैं।
5. समानतापूर्ण समाज के निर्माण के लिए स्त्री के आत्मसम्मान, स्वतंत्र निर्णय और सामाजिक सहभागिता को महत्त्व देना आवश्यक है।

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 15 | July-September -2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 75 -78

निष्कर्ष-जीवन की समस्याओं तथा सामाजिक व्यवस्था के पारस्परिक संबंधों को समझने में सहायक है। 'ठीकरे की मंगनी' में महरूख के चरित्र के माध्यम से स्वतंत्र पहचान और आत्मनिर्णय के प्रश्न सामने आते हैं, जबकि 'शाल्मली' में वैवाहिक संबंधों तथा कामकाजी स्त्री की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण किया है। इन दोनों उपन्यासों से यह समझने में सहायता मिलती है कि सामाजिक परिवर्तन के लिए केवल व्यक्तिगत उपलब्धियाँ पर्याप्त नहीं हैं; सामाजिक मानसिकता, पारिवारिक संबंधों और लैंगिक समानता के प्रति दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आवश्यक है। स्त्री को स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करना एक न्यायपूर्ण और संवेदनशील समाज की स्थापना के लिए महत्त्वपूर्ण है।

अतः नासिरा शर्मा का साहित्य समाजशास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से उपयुक्त है। उनकी रचनाओं का गहन विश्लेषण करने से समकालीन समाज में स्त्री की स्थिति, सामाजिक मान्यताओं और मानवीय संबंधों की जटिलताओं को अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

****

संदर्भ:-

1. नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी, पृष्ठ - 193
2. नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी, पृष्ठ - 90
3. नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी, पृष्ठ -197
4. नासिरा शर्मा, शाल्मली पृष्ठ . 11
5. नासिरा शर्मा, शाल्मली, पृष्ठ . 74
6. नासिरा शर्मा, शाल्मली, किताब घर प्रकाशन,नई दिल्ली- 2018 पृष्ठ .56